जनाबे ज़ैनब(स.अ)
पासबान दिन व शरीयत

मौलाना तक़ी अब्बास रिज़वी

पेशकश

अहलेबैत फाउंडेशन

एक मुख़्तसर तारुफ़

नामः ज़ैनब बिन्त अली(अ)

शोहरतः

इमाम अली (अ) की साहबज़ादी और पैग़म्बरे इस्लाम की नवासी

तारीख़ ए विलादतः

पांच जमादिउल अव्वल पांच हिजरी क़मरी

जाए विलादतः

मदीना

कुन्नियतः

उम्मे कुलसूम

लक़बः

अक़ीला बानी हाशिम

वालिदः

हज़रत इमाम अली अलगिहस्सलाम

वालिदाः

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा सलामुलहालेहा

तारीख़ ए वफ़ातः

15 रजब 63 हिजरी क़मरी

मदफ़नः

दमिश्क़

सुकूनतः

मदीना

शरीके हयातः

अब्दुल्ला इब्ने जफ़र

औलादः

मुहम्मद, ओन,अली,अब्बास,उम्मे कुलसुम

उम्रः 57 साल

صلی الله علیک یا زینب الکبری

"अल्लाह के नाम से"

ज़िदा वफा का नाम है ज़ैनब के नाम से

मजलिस का एहतमाम है ज़ैनब के नाम से

आगाह अब भी शाम है ज़ैनब के नाम से

ये कर्बला दवाम में ज़ैनब के नाम से

ज़ैनब का हर ब्यान है तफसीरे कर्बला

ज़ैनब का इम्तेयाज़ है तशहीरे कर्बला

आबरू–ए–इस्लाम लोहे महफूज़ की ज़ीनत, परवरदा–ए–खानदानों नबुवतों व रिसालत, पासबाने दीनों शरियत, मुहाफ़िज़े इमामत, पासदारे विलायत, नायब मोहसिने इंसानियत, मादने इल्मो हिकमत, अफतों हया की सल्तनत, असवए सब्रो सहामत, पैकरे हलमों शुजाअत, हैदरे कर्रार की ज़ीनत, साहिबे इल्मो मारफत, जाने इबादत, शफा–ए–क़यामत, फातो शामे व कुफे, फज़लों कमाल में बेनज़ीर व बेमिसाल, उलूम व फज़ायल आलै मौहम्मद से सरशाद, एहताते खुदा में शब ज़िदादार, इल्मों तक़वा और नमाज़े तहज्जुद में यक़ताए रोज़गार, असीरे कर्बला की यारो मददगार, राहे हक़ को हक़ीक़त में कर्बला की फर्ज़ शनाश, हुसैनी तहरीर की रूहे रवा, इसारो वफादारी, सब्र तहम्मुल, शुजाअत व इस्ताक़मत का पैकर, ज़ैनबे कुब्रा आशूर के बाद कर्बला के काफिला की अब काफिला सालार और ऐसे क़ायतद हैं के अगर ज़ैनब कर्बला में न होती तो कर्बला, कर्बला में ही महब होकर रह जाती। यह ज़ैनब का ही मौजिज़ा है कि दुनिया कर्बला और हुसैन के नाम से आशिना है।

ज़ैनब का मौजिज़ा है के कर्बोबला के बाद

तबदील कर सका न कोई वाक़यात को

ज़ालिम को मुहं छिपाने की मोहल्लत न मिल सकी

इस तरह से पलट दिया कुल हादसात को

शहादते इमाम हुसैन के बाद कर्बला और दीने इस्लाम की पाकिज़ा तालिमात की तहफ्फुज़ और पाज़दारी की ज़िम्मेदार दो शख़्ससियत के कंधों पर रखी गई। पहली शख़्सियत सय्युल साहिदीन इमाम जैनुलआबेदीन (अ0) की है कि है तो दुसरी शख़्सियत नयाब–एज–ज़ौहा अक़ीला–ए–बनीहाशिम आलामे गैरे मुअल्लिमा शरिक़तुल हुसैन सैय्युद ज़ैनब की है। इन दोनों शख़्यितों नेक बादे कर्बला, कर्बला को हयात तो अता की और कर्बला को कर्बला में महदूद होने से बचाकर दुनिया की हर सरहदों से उसकी सरहद को मिलाकर उसे ऐसा लाफानी बना दिया के नस्ल दर नस्ल कर्बला का पैग़ाम दोहराए जाने लगा। लिहाज़ा जब तक दुनिया में कर्बला का तज़करा होता रहेगा दुनिया सैय्यद ज़ैनब व इमाम सज्जाद को ख़राजे अकीदत पेश करती रहेगी। कर्बला की शेरे दिल खातून ज़ैनब–ए–कुबरा ने बादे हुसैन इमामे व विलायत की पासदारी करते हुए कर्बला की सरज़मीन पर क़स्बे कमाल में वह मकाम हासिल किया जिसकी सरहदें दायरे इमकान में आने वाले हर कमाल से आगे निकल गई और हज़रते ज़ैनब की शख़्सियत तारीख़े बशरियत की किरदार साज़ हस्तियों में एक अज़ीम और मुनफरिद मिसाल बन गई।

ज़ैनब बिन अली की तारिखे इस्लाम में अपने एक मख़सूस इंफरादियत है और वाक़य कर्बला में आपके सब्रो शुजाआने जिहाद

में इमाम हुसैन (अ0) मुकद्दस मिशन की तकमील को यक़ीनी बनाया। आपने दीने इस्लाम की पाकिज़ा तामील का तहफ्फुज़ व पासदारी में अपना किरदार इस तरह अदा किया के जैसे अबुतालिब रसूल अल्लाह की परवरिश में अपने भतिजे के तहफ्फुज़ के लिए अपनी औलाद को निछावर करना पसंद करते थे। क्योंकि उनका एक मक़सद था कि मौहम्मद बच जाए वारिसे इस्लाम बच जाए बिल्कुल उसी तरह ज़ैनब–ए–कुबरा का हाल ये था कि इस्लाम बच जाए दीन बच जाए चाहे कोई भी कुर्बानी देनी पड़े।

वाक़ये कर्बला इस कद्र अज़ीम है के अब भी इसके कई नाशनाख़्ता पहलू बाक़ी हैं। जिन्हें आलामे बशरियत के लिए वाह वाह करने की ज़रूरत है। इसलिए कि जब उसे हमारे लिए यह बात वाज़ा है कि इमाम हुसैन व उसके अज़ाब व अक़ारिब हक़ व बातिल में हददेफ़ासिल खींचने के लिए था। इस क़याम का मक़सदो व हदफ इस्लाहे उम्मत था। तो इससे वाबस्ता हर शाह अब वो चाहे गिरया व अज़ादारी हो, मजलिस व मातम इन सभी चीज़ों का मक़सद भी वही होना चाहिए और अगर क़यामे हुसैन और नामे हुसैन से वाबस्ता शह अगर इस्लाहे नफस इस्लाहे मुआशरा की तरफ मुनहमिक है तो यह समझा जाए कि इमामे मज़लूम का मक़सद ज़ैनब–ए–कुबरा और इमामे सज्जाद की मेहनते पूरी हो रही हैं। और अगर यह महज़ ट्रिडेशन और तफरी और और तबाह का तबास है तो यह समझा जाए कि सिवाए बरबादी–ए–वक़्त और अरसा–ए–हयात को तंग करने के कुछ भी नहीं है। इसलिए कि ज़ैनब बिन अली ने इस्लाम की बक़ा और हुसैन इब्ने अली के मिशन की तरवीज के लिए अपनी सारी कमाई उस राह में लुटाकर यज़ीद के इरादे को चकनाचूर कर दिया। मगर ज़ालिम और जुल्म के आगे

कभी सर तसलीम खम नहीं किया। कहने वाले ने क्या खूब कहा है :

परदे में रहते जुल्म के परदे उलट गई

पहनी रसन तो जुल्म की ज़जीर कट गई

नज़रे उठी तो जब्र की बदल बिछड़ गई

लब सी लिये तो ज़ब्त में दुनिया सिमट गई।

अगर हम शरिक़तुल हुसैन सैय्यदा ज़ैनक के पैरोकार हैं तो हमें अपनी ज़िन्दगी के हर शोभे में उन्हें अपना रोल मॉडल बनाकर उनकी ताअसी और एत्तेबा करना चाहिए कि यही इनकी तक़ाज़ाए मोहब्बत है। हमारी रफतार और गुफतार, हमारा चाल चलन, हमारा एक दूसरे से बरताव, हमारा पहनावा, उन्हीं की सिरतों तालिमात के मुताबिक हो ताकि देखने वाले हमें देख कर यह कहने पर मजबूर हो जाए कि ये वाकई में नबी की नवासी हज़रत अली बिन अली के चाहने वाले हैं। अगर जनाब ज़ैनब कुबरा पासबाने दीने शरियत है तो हमें मुहाफिज़े दीने शरियत बनना चाहिए। अगर ज़ैनबे कुबरा जुल्म और बरबरियत के खिलाफ़ सदाए एहतेजाद बुलंद करती रही तो हमें भी अपने मुआशरे में जुल्मों सितम दरिंदगी, व बहिनियत और हर बुराई के खिलाफ़ मुज़ाहिरा करना चाहिए। और अगर जनाब ज़ैनबे कुबरा आलिमा–ए–गैरा मौअल्लिमा है तो हमें भी साहिबे इल्मोफन होना चाहिए। अगर ज़ैनबे कुबरा अपने घर की ज़ीनत और इज़्ज़ते आबरु हैं तो हमें भी अपने घर की ज़ीनत और आबरू का सबब बनना चाहिए। अगर वो बेहतरीन बेटी, बेमिसाल बहन, बेनज़ीर बीबी, और बकमाल माँ थी तो हमें भी ऐसा होना चाहिए। लेकिन अफ़सोस!!!!

फिलवक्त हमारे समाज में जो उरयानियत , बेहयाई, और बेशरमी का बाज़ार गर्म है इस पर जितना आसू बहाया जाए कम है। गैरों की बात तो दूर अब हमारा मुआशरा भी इस तुफाने बत्तामीज़ी की ज़द में है। दौरे हाज़िर की यज़ीदी में सिनफे निसवां को बेपर्दा और नीमउरया करके उन्हें बाज़ीचाए इतफाल और शम्माए महफिल बना दिया है। कनीज़े ज़ैनब का दावा करने वाली बाज़ औरतें अब इस हद तक गिर गई हैं कि मजालिसों जुलूस में भी बेपर्दागी की नुमाईश करना अब उनका फैशन और दीन बन चुका है। दरवाक़ये उनकी यह मॉडनीटी इतनी उरूज पर पहुंच चुकी है कि अब वो हुदुदो इलाही को मोअत्तिल करने का सबब बन रही है जो ज़ैनबे कुबरा की तालिमात से अली–उल–ऐलान बग़ावत भी है और उनकी यज़ीदी मुंह बोलने का सूबूत भी है।

ज़ैनब कुबरा खुतबे का जब हम मुताअला करते हैं तो हमें उन तमाम अहम बातों में अहम बात पर्दा की मिलती है। शहज़ादी अपने खुतबे में फरमाती हैं : खुदा का शुक्र है कि उसने अपने रसूल के ज़रिए उसने हमें इज़्ज़त बख़्शी और गुनाह से दूर रखा। रूसवा तो सिर्फ फासिक होते हैं झूठ तो सिर्फ तज्जा जैसे बदकार ही बोलते हैं। अलहमदोल्लिाह हम बदकार नहीं हैं।

याबिन तलका (ए आज़ाद करदाशख़्स के फरजन्द) क्या यह अदल है! तेरी बेटियां और कनीज़े बईज़ज़्त पर्दे में बैठे और रसूल की बेटियों को तो असीर करके सरबरहेना फिराए। तेरी फौज ने ऊटों पर सवाल करके शहर बशहर फिराए? न उन्हें कोई पनाह देता और न किसी को उनकी हालत का ख़्याल है। न ही कोई सरपरस्त उनके हमराह है।

ज़ैनब बिन्ते अली यज़ीद–ए–मलून को इब्ने तलका कहकर खिताब करती हैं। तलका उन लोगों को कहते हैं जो कि रसूल खुदा से दुश्मनी रखते थे, जंग करते थे। लेकिन फतह मक्के के वक्त रसूल ने सल्लाहोवालेह ने उन्हे अज़ाद कर दिया था और फरमाया था "अज़हबो अंतुम अतख़ा" जाओ तुम सब आज़ाद हो यज़ीद उन्हीं असखास का बेटा है जिन्हें रसूल ने आज़ाद कर दिया था। और आज उसने खानदाने पैग़म्बर को असीर बना रखा है।

यहाँ सवाल अब यह पैदा होता है कि क्या जनाबे ज़ैनब का दरबार यज़ीद में यह जुमला और यह एहतेजाज महज़ यज़ीद और यज़ीदीयत के लिए था? क्या हमारे लिए ये लम्बा फिक्रिया नहीं है? क्या उन बेग़ैरत बेपर्दा औरतों और उनके आलाख़ाना अज़ीज़ों अक़ारिब के लिए औरों फिक्र का लम्हा नहीं है?

साचिए ज़रा ग़ौर कीजिए दरवाक़ई ये बेपर्दीगी बउरयानियत, बेशर्मी व बेहयाई, बेईमानी और बेदीनी, यज़ीद और यज़ीद माअशिये की तरवीज है।

जनाबे ज़ैनब से इस कलाम से तमाम बईमान और एहलेबैत का एत्तेबा करने वालों को जो पैग़ाम दिया जा सकता है वो वाफत व हजाब का पैग़ाम है। आलाए क़लायेतुल हक़ का पैगाम दीन से दफा का पैगाम, और शरियते इलाही पर अमल करने का पैगाम है। लिहाज़ा तमाम लोगों को बिलख़सूस सिनाफे निसवां को बजाए दूसरों को अपना रोल मॉडल कर्रार देने के उन्हें ज़ैनबी आईना में खुद को देखते हुए अपने किरदार को सवारना चाहिए।

शहज़ादी ज़ैनबे कुबरा की सिरत और उनका किरदार तमाम ख़्वातीने आलम के लिए नमूना–ए–अमल है। उन्हें अगर बतौर बेटी

देखा जाए तो एक बेहतरीन एताआत गुज़ार व फरमाबरदार बेटी बनकर रहीं, अपने वालदैन की तरबियत को कबूल किया। भाईयों से हमेशा हुस्न अख़्लाक़ और कुर्बानी का जज़्बा इख़्तेयार किया। शौहर को कभी शिकायत का मौक़ा नही दिया। अपने बच्चों की ऐसे आला तरबियत की कि वो खुद को इस्लाम पर कुर्बान करने के लिए बेचैन थे और जब हक़ को बचाने और दीने इस्लाम के तहफ्फुज़ का सवाल आया तो शुजाआना किरदार अदा करते हुए कर्बला से कुफा, कुफा से शाम और फिर मदीने तक तारीख का सबसे बड़ा लौंगमार्च किया। जिसके नतीजे में इस्लाम और इंसानियत को ज़िन्दाबाद कर दिया। यज़ीद और उसके नज़रीयात को दफन कर दिया।

वक़ारे मरयम हव्वा!सलाम हो तज्जा पर

सलाम सानियाजहरा!सलाम हो तज्जा पर

शरिक़ातुल हुसैन जनाबे ज़ैनब कुबरा फरमाती हैं : खुदावंद मुताआल को तुम पर जो कुवत और इख़्तेदार हासिल है उसको सामने रखते हुए उससे डरते रहो और वो तुम से किस क़द्र करीब है उसको पेशे नज़र रखकर (गुनाह करने से) शर्म करो।

क्या तुम देखते नहीं हो कि हक़ पर अमल नहीं किया जा रहा और बातिल से रोका नही जा रहा। बस मोमीन को चाहिए कि सूरते हॉल में अल्लाह से मुलाक़ात की तमन्ना करें ऐसे में मैं मौत को अपने लिए साआदत के सिवा कुछ नहीं समझता। और ज़ामिलों के साथ जिन्दा रहना मुझे हरगिज़ गवारा नहीं।

आईये हम सब आईना–ए–हुसैनियत में अपना सरापा देखें। अपने किरदार का हुसैनी और ज़ैनबी किरदार से मौआज़ना करें

और फिर खुद से अंदाज़ा करें कि हम मार्क—ए—हक़ व बातिल में किस तरफ खड़े हैं।

क़दम क़दम पे मक़ासिद की अज़मतों का ख़्याल

नफस नफस में भतीजे की ज़िन्दगी का सवाल

रिदा छीनी तो बढ़ा और इस्मतों का जलाल

खुले जो बाल तो निखरा हुसैनियत का जमाल

नक़ीबे फताह शहे मुशरेक़ीन बन के उठी

न थे हुसैन तो ज़ैनबे हुसैन बन के उठी

***

जनाबे ज़ैनब(स.अ)

के बिना कर्बला की तारीख़ अधूरी है

अगर ज़ैनब न होतीं तो इमाम हुसैन की कुर्बानी के मक़सद ओ मिशन को लोगों के बीच पहुंचना मुश्किल था... जुल्म के खिलाफ आवाज उठाना सुन्नते ज़ैनबि है . मैं उन को नेक जज़्बे के साथ सलाम पेश करता हूं जिनके जद ओ जहद और कुर्बानिओं ने हमें आज यहां तक पहुंचाया है और अज़ादारी की ज़रिया हमें इमाम हुसैन से ता क़यामत मुंसलिक कर दिया(मौलाना तक़ी अब्बास रिज़वी)